संपादकीय

प्रिय पाठकों,

पिछले अंक में आपका अपार स्नेह हमें मिला। इसके लिए आपका बहुत बहुत शुक्रिया। अँग्रेजी नव वर्ष के इस अवसर पर हम अपने दूसरे अंक के साथ आपके समक्ष उपस्थित हैं।

इस अंक में लघुकथा, लेख, कविता, कहानी, व्यंग्य, गीत, ग़ज़ल और शोध लेख सम्मिलित हैं। मकर संक्रांति पर्व की वैज्ञानिक महत्ता को लेख के माध्यम से बखूबी बताया गया है। मूल्यों के व्यावहारिक पक्ष को लेकर भी लेख के जरिये चर्चा की गई है। लघुकथा में 'यूज एंड थ्रो' और 'विदाई' के साथ कहानी में अटूट बंधन अपना भावनात्मक पक्ष रखती है। गीत में 'श्री गीता' तो व्यंग्य में 'लंका' शामिल है। शोध की दृष्टि से भी कई लेखों को इसमें स्थान दिया गया है। जिसमें 'आदिवासी पहचान और संस्कृति', भीष्म साहनी का नाट्य साहित्य सृजन और साहित्य की सिनेमाई पटकथा में रूपान्तरण की समस्याओं आदि को लेकर विस्तृत चर्चा है। हिंदी साहित्य के लोकप्रिय कवि 'केदारनाथ सिंह' पर भी एक शोध लेख शामिल है। कवि केदारनाथ सिंह की कविताओं ने हिंदी ही नहीं बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं की कविताओं के मुहावरे, भाषा और बिंब विधान आदि को गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। केदारनाथ सिंह की कविताएँ हमें एक ओर गहरे समकालीन यथार्थ से जोड़ती हैं तो दूसरी तरफ लोक जीवन से हमारी अनिवार्य संगति को भी सघनता के साथ व्यक्त करती हैं। बतौर लेखक ने केदारनाथ सिंह की जनवादी कविताओं और मानवीय संसार की गहरी अनुभूतियों का विस्तार से वर्णन किया है। वहीं पत्रिका के अंत में ग़ज़ल विधा में ख्वाहिश और जिंदगी की बदलती तस्वीर को बयां किया गया है।

आशा है इस अंक को भी आपका भरपूर प्यार मिलेगा।
आपके अमूल्य सुझावों की अभिलाषा में प्रतीक्षारत...

आशुतोष श्रीवास्तव
पीएच.डी. (हिंदी सिनेमा)
एम.फिल. (फिल्म एंड थियेटर)
एम.ए., बी.ए., बी.एड.
यू.जी.सी नेट (हिंदी), सीटेट
अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
इलेक्ट्रॉनिक मीडिया मैनेजमेंट एंड फ़िल्म प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
भारतीय एवं पाश्चात्य कला और सौंदर्यशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा